माँ-पा

काव्य संग्रह

(हमेशा एक दूसरे के साथ)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

माँ-पा (हमेशा एक दूसरे के साथ) (काव्य संग्रह)

माँ-पा

(हमेशा एक दूसरे के साथ)

(कमलवीथि पुष्प-12)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

कवर फोटो-उर्वशी बौड़ाई शर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-252-4

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9424765259, 9009465259

ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**

वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**

प्रथम संस्करण- 2020, डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

मूल्य- 250.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DR. BHARTI VERMA BOUDAI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इस जग में रहे सदा तुम
एक-दूजे के साथी बन कर
साथ निभाने चले गए हो
अब उस जग के वासी हो कर
पुनर्जन्म जब भी हो तुम्हारा
फिर से जीवनसाथी बनना
और जब माता-पिता बनो
मुझको ही अपनी बेटी चुनना।

अपनी **माँ और पापा** की पावन स्मृति में उनको

सादर समर्पित

क्या लिखूँ

जिन्होंने मुझे जन्म दिया, मुझे रचा, मुझे गढ़ा उनके बारे में कुछ भी कहने पर निशब्द हो उठती हूँ। मैं तो दोनों की लिखी एक रचना हूँ। जिसने मुझे लिखा... मैं उनके बारे में क्या लिखूँ? जब गणेश जी को ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करने के लिए कहा गया था तो उन्होंने अपने माता-पिता भगवान शिव और पार्वती जी की परिक्रमा करके कहा था कि मैंने ब्रह्माण्ड की परिक्रमा कर ली है... मेरा संसार भी मेरी माँ और पापा थे। समय बीतने के साथ-साथ माँ के साथ मेरा रिश्ता सखी-सहेली का बनता चला गया और पापा भी मेरे पापा से अधिक मित्र होते चले गए। इस तरह हमने भरपूर अपने रिश्तों को जिया। आपसी संवाद भी भरपूर रहा, साहित्य चर्चा पापा के साथ होती रहती थी।

जब मैं अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा अध्यापिका पद के लिए चयनित होकर वहाँ गई तो वह एकदम नया, अनजाना परिवेश, लोग... वहाँ व्यवस्थित हो पाना ही एक दुरूह कार्य था। मेरी माँ और पापा के हर सप्ताह मुझे पत्र मिलते थे जिन्होंने वहाँ व्यवस्थित होने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। उनके लिखे असंख्य पत्र मेरे पास हैं जो मेरी अनमोल पूँजी तो हैं ही, रामायण की तरह मेरे लिए पवित्र भी हैं। जब भी उनके सामीप्य को जीना चाहती हूँ तो उन पत्रों को पढ़ा करती हूँ।

माँ-पापा के साथ अपने रिश्तों को मैंने इतनी सुंदरता और संवेदनशीलता के साथ जिया कि उनके साथ रहते हुए मैंने दोनों पर केवल एक-एक कविता लिखी, जो मेरे प्रथम काव्य संग्रह "कविता का अरुणांचल "में है। मैं उन्हें अपने हृदय की गहनता के साथ जीती थी,

इसी कारण उनके लिए कभी कुछ लिखने की आवश्यकता ही नहीं अनुभव हुई।

पर जब वे दोनों डेढ़ माह के अंतराल पर एक-एक कर मुझसे बिछड़े तो लगा मेरा संसार ही जैसे लुट गया। उस समय भी दोनों मेरे विघ्नहर्ता बने... जैसे कह रहे हो कि मेरी विरासत को संभालने के लिए लेखनी उठाओ, अपने भीतर के दुख को लिख कर आगे बढ़ो। अश्रु बहते रहते, दुख शब्दों में ढलता रहता। आज भी मैं दोनों के बिछोह को मन से स्वीकार नहीं पाई हूँ। उस व्याकुलता में मेरी लेखनी ही मुझे संभालती रही है। जो भी भावनाएँ शब्दों में उतरती रही... उन्हें ही समेट-सहेज कर उन्हीं की पावन स्मृति को माँ के 07 नवम्बर और पापा के 25 दिसम्बर 2020 को दोनों के जन्मदिन पर आज समर्पित कर रही हूँ।

बहुत कठिनता से अपने को यह समझा पाई हूँ कि जब तक मैं उनका अंश जीवित हूँ वे मुझमें हैं उसके बाद मेरे बच्चों, उनके बाद उनके बच्चों में सदा जीवित रहेंगे। माता-पिता कहीं नहीं जाते, बस रूप बदल लेते हैं और सदा साथ रहते हैं। यह बात मैंने प्रख्यात कवयित्री चित्रा देसाई जी की फेसबुक पोस्ट में पढ़ी थी और इसने मेरे दुखते हृदय पर सांत्वना के फाहे और स्पर्श का काम किया। इसके लिए मैं उनकी कृतज्ञ हूँ।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

मुझे भी कुछ कहना है

मैं जब ढाई वर्ष की थी तब मेरे मम्मी-पापा ने मुझे देहरादून में मेरे नाना-नानी के पास पढ़ने के लिए छोड़ दिया था क्योंकि वे अरुणाचल प्रदेश में नौकरी कर रहे थे और मुझे वहाँ न पढ़ा कर देहरादून में पढ़ाना चाहते थे। मैं छोटी थी तो उन्हें ही अपने मम्मी-पापा समझती और कहती थी। अंत तक उन्हें मैंने मम्मी-पापा ही बुलाया। नाना-नानी तो कभी कहा ही नहीं।

वे सबसे पहले उठते थे और चाय बना कर कहते थे...उठो! उठो! गर्म-गर्म चैकड़ी तैयार है। तो मैं और मेरा छोटा भाई....हम दोनों उन्हें चैकड़ी पापा कहने लगे थे, इससे वे बहुत खुश होते थे।

मम्मी दही-बड़े, गुझिया, मीठे शकरपारे, नमकीन और मीठी मठरी बहुत अच्छी बनाती थी। हम बहन-भाई तो उनकी बनाई इन चीजों के बड़े लालची हुआ करते थे। वे स्वेटर भी हाथ से बहुत अच्छे बुनती थी जो एकदम मशीन के बने लगते थे। मेरे लिए तो उन्होंने ही बहुत सारे स्वेटर बनाये थे। चैकड़ी पापा तो मेरे साथ बच्चे बन जाते थे। वे मेरी किसी बात को नहीं टालते थे। मम्मी और मेरी मम्मी को जब उनसे कोई बात मनवानी होती तो मुझे ही कहने के लिए कहते थे। बहुत सारी यादें हैं उन दोनों के साथ की। उनसे मिला प्यार मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी।

मैं उनके साथ लगभग पंद्रह-सोलह वर्ष रही। कॉलेज की पढ़ाई शुरू होने पर मैं अपने मम्मी-पापा के साथ रहने आ गई थी। तब वे मुझे मिलने आया करते थे। जब वे आते तो मैं और मेरा भाई... मिल कर उनका सामान छिपा देते और उन्हें कई दिन रोक कर रखते थे।

जब वे दोनों हमें छोड़ कर भगवान के पास चले गए तो मैं और मम्मी दोनों टूट गए थे। बहुत मुश्किल से हमने एक-दूसरे को संभाला था। इस पुस्तक में मम्मी के द्वारा लिखी गई सभी रचनाओं की मैं साक्षी रही हूँ। इन्हें लिखते समय उनका दिल कितना रोया है... यह मैं ही जानती हूँ क्योंकि वे दोनों हमारे दिल के सबसे पास और हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण प्यार लुटाने वाले व्यक्ति थे।

मेरा घर में पुकारने का कुक्की नाम चैकड़ी पापा ने और उर्वशी मम्मी ने रखा था। वे कहते थे कि यह कोयल की तरह कूकती है तो कुक्की और हमारे उर में बसी है तो उर्वशी!

जब मम्मी ने इस पुस्तक के विषय में मेरे से बात की तो पुस्तक नाम भी और कवर पृष्ठ भी मैंने स्वयं ही चुना, जिसमें पहाड़ों के बीच नदी और सड़क मम्मी और चैकड़ी पापा की तरह जैसे साथ-साथ चल रहे हैं।

यह पुस्तक मेरी मम्मी के साथ-साथ मेरा भी सपना रही है। बस यही बात सदा मन में आती रहती है.... वो दोनों होते, हम सब साथ-साथ होते तो कितना अच्छा होता।

उर्वशी बौड़ाई शर्मा
देहरादून

अनुक्रमणिका

1.	माँ	11
2.	ओ पिता	12
3.	हुई कहानी	13
4.	अम्मा	14
5.	मैं क्या करूँ?	16
6.	मन से....!	17
7.	कितने दिनों बाद	19
8.	तीन वर्ष	19
9.	प्रार्थना	21
10.	पिता से	21
11.	मैं तेरे साथ हूँ	22
12.	बेटियाँ (पापा के भाव : मेरे शब्द)	23
13.	पिता	26
14.	सुनो पापा!	27
15.	खो गया सब	29
16.	दो जोड़ी आँखें	29
17.	भँवर	30
18.	कैसा जन्मदिन?	31
19.	पापा को याद करते हुए	32
20.	एफ० आर० आई० देखते हुए	34
21.	खड़ी हूँ	36
22.	लौट रही हूँ	37
23.	पूरक एक दूजे के	38
24.	परछाई	41
25.	मुझे सुलायेगी	42
26.	माँ	42
27.	पिता	44
28.	एक बार तो आओ माँ	45
29.	पिता	46
30.	मातृ दिवस पर	47

31.	काजल की डिब्बी	48
32.	जब तक	50
33.	सब कुछ होते हैं	51
34.	पापा	51
35.	पिता	53
36.	माँ तो माँ होती है	55
37.	मुझे पता है	55
38.	पौधा	56
39.	पम्मी	56
40.	माँ का प्रेम	57
41.	एक शब्द नहीं	57
42.	कुशल वैद्य	58
43.	कुछ माएँ....!	58
44.	संजीवनी बूटी	59
45.	अस्तित्व	59
46.	गुलमोहर पिता	60
47.	मेरे पापा	61
48.	मेरे पिता	63
49.	माँ	64
50.	तेरे जाने के बाद	67
51.	माँ की पुण्यतिथि पर	67
52.	माँ (सायली)	69
53.	माँ को याद करते हुए	70
54.	पिता और राजकुमारी	71
55.	पापा...तुम से सीखे	73
56.	पिता की परी	74
57.	चली गयी माँ	75
58.	माँ	76
59.	तुम्हीं से	77
60.	पहला प्यार	78
61.	मैं तुझे फिर मिलूँगी माँ	79
62.	क्यों चले गये माँ-पा	81

63.	**आँचल**	82
64.	**क्यों नहीं बताया?**	84
65.	**तुम कहाँ हो?**	85
66.	**एक माँ**	87
67.	**मातृ दिवस**	88
68.	**तुझे दे रहे आवाज हैं**	90
69.	**धागा**	91
70.	**अचानक**	92
71.	**जब भी**	93
72.	**तुम्हें पता है न?**	95
73.	**प्रतिज्ञा दिवस**	97
74.	**पापा की सातवीं पुण्यतिथि पर**	98
75.	**विवाह जयंती पर**	99
76.	**अचार**	100
77.	**राहें अलग अब होने लगीं**	100
78.	**सावन आया**	102
79.	**सम्भाल रखा है**	103
80.	**माँ (सेदोका)**	103
81.	**देख तो**	105
82.	**थोड़ा रो लेती हूँ**	106
83.	**माँ**	106
84.	**ओ रे चंदा!**	107
85.	**माँ पा**	109
86.	**लो बन गए**	110
87.	**संवाद**	111

माँ!

माँ
जैसे दूर से
आता हुआ
बाँसुरी का मधुर स्वर!

माँ
जैसे क्लांत-श्रान्त
पथिक को घने
वृक्ष की शीतल छाँह!

माँ
जैसे मन-मंदिर में
गूंजती पूजा की
आरती का मधुर स्वर!

माँ
निस्वार्थ प्रेम
त्याग-समर्पण का
एक अकेला नाम!

माँ
घर की प्राण
जीवन का एक
अनमोल वरदान
बेटियों के
मायके की शान!

ओ पिता!

ओ पिता!
तुम जय गान इस घर के!

शीश पर
ममता की छाँव
दुखक्षणों में
नियत ठाँव
ओ पिता!
तुम अरमान
इस घर के!

दी ये दुनिया
रंग-बिरंगी
शक्ति बन चले
साथ हर जगह
ओ पिता!
तुम स्वाभिमान
घर-जीवन के!

सरस्वती का वास तुमसे
रुदन-हास
सब कुछ तुम्हीं से
ओ पिता!
अमिट वरदान
इस घर के!

तुम गए क्या
रूठी खुशियाँ
ढूँढती चतुर्दिक
मेरी अँखियाँ
ओ पिता!
खो गए कहाँ इस घर से!

बचपना सँवरा
तुम्हारे बचपने से
राग-रंग बिखरे
तुम्हारी मुस्कान से
ओ पिता!
तुम अभिमान
इस घर के!

देह नहीं पर
तुम यहीं हो
दिखते नहीं पर
यहीं-कहीं हो
ओ पिता!
मुझमें बसे तुम
प्राण इस घर के!

हुई कहानी

जन्म दिया चलना सिखलाया
दुनिया में जीना सिखलाया
सही/गलत का भेद बताया
मुझको मुझसे ही मिलवाया
अब यह बात हुई कहानी!

तेरी गोद में खेल कर बड़ी हुई
तेरी उंगली थाम कर खड़ी हुई
तेरी सीखों से दुनिया में नित
संघर्षों में भी तनी/ठनी रही
अब यह बात हुई कहानी!

अब न रही तुम, नहीं रहा
तुमसे आबाद मेरा मायका
जब मैं आती बाट देखती
माँ तुम मिलती संग पिता के
अब यह बात हुई कहानी!

घंटो नयी/पुरानी यादों में
जीते/उतराते, रोते/मुस्काते
अपने दुख/सुख, कह-सुन कर
हम हल्के होते, खाते-पीते
अब यह बात हुई कहानी!

इस संसार की हर माँ में तुम!
मेरी जीवन की हर याद में तुम!
मेरा मायका बिना तुम्हारे, बिना
पापा के ऐसे न वीरान रहेगा
उत्तरगिरि भवन में निशि दिन
तुम्हारी यादों का दीप जलेगा
मेरी माँ! मेरा मायका अब सदा
माँ-पापा की यादों से बसा रहेगा
अब यह बात नहीं कहानी!

अम्मा

तस्वीरों को
जतन से सहेजने वाली
तस्वीरों से बहुत
प्यार करने वाली
आज स्वयं एक
तस्वीर हो गयी अम्मा!
पीछे छोड़ गयी अपने
कुछ अधजिये सपने
कुछ अतृप्त इच्छाएँ
कुछ अनकही बातें,
अब कैसे समझूँ

उन बोलती आँखों का सच
जो अनबोला उनसे
और अनसुना मुझसे रह गया,
क्या सोचूँ, कैसे समझूँ
क्या चाहती थी,
क्या करना था
क्या करना है मुझे...!
किससे पूछूँ?
तस्वीर बनी अम्मा देखती तो है
पर बोलती नहीं,
इतनी जल्दी भी क्या थी
जाने की तुम्हें?
जो एक तस्वीर मात्र
बन कर रह गयी
हमारे लिए अम्मा!
देखते-देखते
पचहत्तर वर्ष
कहानी हो गए...!
इनमें जिया जीवन
समाप्त हो एक तस्वीर में
सिमट कर रह गया है
मुझे जीवन भर
रुलाने के लिए.....!!!

मैं क्या करूँ?

जीवन को
मजबूती से जीने वाला
यों एकाएक
क्यों मृत्यु से
इतना नेह लगा बैठा
कि जीवन जीना भूल गया...!
हम जीवित क्यों न याद रहे
जीवन की ओर बढ़ते कदम
मृत्यु की ओर क्यों बढ़े.....!!
वे काम, वे सपने, वे योजनाएँ
जो अपनी संगिनी संग
मिल कर सोचे थे करने को
यों बीच अधर में छोड़-छाड़ कर,
चले अचानक मृत्यु वरण कर
सब मुझ अकेली पर छोड़,
कहाँ का न्याय है पापा!
मेरे भी तो कुछ अधूरे काम
माँ ने छोड़े थे आप पर,
और आप मुझ पर छोड़
यूँ निकले घर से साथ मेरे
कि वापस संग न लौटे,
उन्हें मैं कैसे करूँ?
मैं क्या करूँ?
मैं क्या करूँ.....?????

मन से..!

याद तुम्हारी उमड़-घुमड़ कर
वर्षा मानिंद बरस-बरस कर,
यहीं -कहीं हो मेरे चतुर्दिक
मुझको यह अहसास कराती।

••••

रिश्तों की इक चादर ओढ़े
जिन रिश्तों को ढूँढ रही हूँ,
वे तो मेरे अगल-बगल हैं
कैसे, क्योंकर भूल रही हूँ।

••••

दूर कहीं दोनों बाहें फैलाये
कोई बुलाता धीरे-धीरे जैसे
देख अकेली मुझको अपना
प्यार सदा बरसाता ऐसे।

••••

थामे हो अब भी मुझको
जैसे बचपन में थामा था
किंतु मोल उन बाहों का
तब मैंने कहाँ जाना था?

••••

नहीं पिता से अलग माँ
माँ से पिता अलग कहाँ
हैं एक प्राण जब से हुए
स्वर्ग दिखे अब मुझे यहाँ!

••••

इस बारिश के मौसम में
कुछ अपने याद बहुत आए,
जिनकी छाया में हो निश्चिंत
जीवन के कई वर्ष बिताए।

••••

उनके पत्रों का संसार है ऐसा
लिखने वाला चला भी जाए,
उसकी खुशबू अपने में लेकर
उसके होने का अहसास कराए।

••••

जब से हाथ छुड़ा कर अपना
पहुँची तुम तारों के पास,
हुई परायी गुझिया, गया
सब त्योहारों का उल्लास।

••••

सब कुछ दिया मुझे पिता ने
अपना दुख ही नहीं दिया,
खुशी बाँट दी सबको अपनी
पर दर्द स्वयं ही जिया।

••••

कोई ऐसा दिवस नहीं है
जब याद तुम्हें न किया हो,
पर लगते सारे काम अधूरे
चाहे सब पूर्ण किया हो।

••••

जब भी रोती-हँसती हूँ मैं
लगता है तुम देख रहे हो,
जीवन के कठिन क्षणों में
मेरा मनोबल तोल रहे हो।

••••

बीतेंगी ये घड़ियाँ भी अब
व्यर्थ करो न आकुल मन को,
इन राहों पर संग हूँ मैं भी
राह बदल मत, बोल रहे हो।

••••

बिन माँ और पापा के हुई
अजनबी वो गलियाँ
जहाँ उंगली थामे उनकी
चलती थी बिना डरे।

••••

कहते हैं दुआ बड़ों की
बनती जीवन पाथेय,
फिर चाहे मिले न कुछ भी
सब लगता अद्‌वितीय।

••••

मेघ मायके में जाकर तुम
मिलना उनकी यादों से,
मैं खुश, पर हँसना भूल गयी
कह देना बातों-बातों में।

••••

बरसों बाद लगायी मेहँदी
इस सावन की तीज में,
याद आ गयी जब मिलती थी
माँ संग खुशियाँ तीज में।

••••

माँ बन कर जानी गयी
माँ के मन की पीर,
माँ जैसी जग में यहाँ
कहीं नहीं है हीर!

••••

माता-पिता के साथ लगे
हर दिन है त्योहार,
अब लगता उनके बिना
सूना यह संसार।

••••

अम्मा-पापा की बातें
आती जब-तब याद,
जब ताप में तपती थी
वह जगते थे सारी रात।

••••

गृह मंदिर के देवता
बदल चुके आवास,
घर से जा रहने लगे
शुभ्र नील आकाश।

••••

मन में उठती हूक सी
जब से सोयी माँ!
मिले न पल भर चैन
जब से खोयी माँ!

••••

कितने दिनों बाद

तुम
क्या खोये
बिल्कुल
अकेली रह गयी मैं!
नहीं कोई अब
जो सिर पर हाथ रख
गले से लगा
कहे मुझे....
तू कितने दिनों बाद
आई बेटी!

तीन वर्ष

आज पूरे तीन वर्ष हुए
तुमको मुझसे दूर हुए।

इन वर्षों का लेखा-जोखा
नहीं किसी अपने ने पूछा
आशाओं-सपनों का प्रतीक
“उत्तरगिरि” भी रहा अनदेखा
देखा करते थे जो सपने
वो सब चकनाचूर हुए।

होते यदि सामान के जैसे
अरमान सभी के पूरे होते
पैसे और जमीन की भाँति
तब सब में तुम भी बँट जाते
ऐसी दुनिया में क्या रहना
जहाँ रिश्ते भी व्यापार हुए।

रिश्तों की जिस बगिया को
तुमने मन-प्राणों से सींचा
उनकी दुनिया अलग हुई अब
हाथ सभी ने अपना खींचा
खुशियों के बिखरे थे जो
रंग...देखो कैसे बेरंग हुए।

मेरी राह देखती आँखें अब
भले मुझे दिखलायी न दें
वेद-ऋचाओं सी वह वाणी
भले मुझे अब सुनायी न दे
आशीर्वाद कवच हो पास
सदा...कैसे उसको दुख छुए।

आज पूरे तीन वर्ष हुए
तुमको मुझसे दूर हुए।

प्रार्थना

प्रार्थना
ईश्वर से
मेरी अब यही
हर जन्म में
तुम ही मेरे "माँ-पा" बनो
और मैं तुम्हारी बेटी,
प्यार देने-पाने में
जो रह गया बाकी
वह मिलता रहे
हर जन्म में
हमें सदा..सदा..सदा।

पिता से

मेरे शब्द
ढूँढते हैं तुम्हें
बतियाने
अपनापन पाने के लिए
नहीं मिलते तो
थक-हार
नतमस्तक हो
तुम्हारे चित्र के सम्मुख
समाधिस्थ हो जाते हैं
आत्मीय संवाद
करने के लिए।

मैं तेरे साथ हूँ

सबसे बड़ा उपहार
होता है पिता का
ये संसार
जो मिलता है हर बेटी को,
संसार दिखा कर
उंगली थामे चलना सिखाए
बचपन की शरारतों में साथ देकर
माँ की डाँट से बचाए,
कैशोर्य की उड़ानों में करे सावधान
युवावस्था के सपनों में
मार्गदर्शक बन चले साथ-साथ,
सुख की छाया में
भले ही दूर से देखे चुपचाप
पर दुख की धूप में
समाधान लिए बने छायादार वृक्ष,
टूटते-गिरते क्षणों में रखे कंधे पर हाथ
और धीरे से कहे कानों में
तू चल, मैं तेरे साथ हूँ,
माँ के साथ भी और माँ के बाद भी
दिलाये मायके के होने का सुदृढ़ अहसास,
उस बेटी का पिता
जब चला जाए अचानक
तब, एक दिन तो क्या
पूरा जीवन भी कम है अपने पिता के लिए।

बेटियाँ

(मेरे पापा के भाव- मेरे शब्दों में)

ईश्वर से मिले
मनोवांछित वरदान सी
हौले से बाबुल के आँगन में
जाड़े की कुनकुनी धूप-सी
उतरती हैं बेटियाँ!

धीमे-धीमे
हिरनियों सी भागती-कुलाँचती
अपनी चहचहाट से
पूरे घर को उजास से भरती
गुंजायमान रखती हैं बेटियाँ!

देखते ही देखते
कब हो जाती हैं बड़ी,
माता-पिता के साथ
जिम्मेदारी लेने
लगती हैं बेटियाँ!

सबके सपने आँचल में समेट कर
अपने गढ़े-बुने सपनों के संग
उड़ान भरने को
आतुर होती हैं बेटियाँ!

उनकी उड़ान में
भावुकता, प्रेम के रंग भरती है माँ
तो ताकत बनते हैं पिता!
पढ़ाते निर्भीकता का पाठ
पहले उंगली पकड़ कर आगे
फिर कंधे पर हाथ रख हाथ
चलते हैं साथ ताकि
हौसलों की उड़ान भर सकें बेटियाँ!

उनकी उपलब्धियों पर
फूले नहीं समाते,
गर्व से इठलाते/इतराते हैं माँ-बाप
जब अपने हिस्से का
आकाश पा लेती हैं बेटियाँ!

बेटियाँ मानती हैं
इन्हें ही अपना आदर्श
जीवन भर उनके होते भी
और उनके जाने के बाद भी,
पूरे घर में इधर-उधर मनमानियाँ करती
डोलती/बोलती हैं, गुनगुनाती हैं,
सदा बिनकहे सब समझ कर
अपनी तूफानी हलचल से

अपने पीहर को सँवारने
आती-जाती रहती हैं बेटियाँ!

और एक दिन
माँ-पिता बन जाते हैं बच्चे
जिद करने लगते हैं
बिल्कुल बच्चों की तरह,
तब न जाने कब और कैसे
माँ की तरह दुलराने
पिता की तरह समझाने
उन्हें और पीहर को संभालने
लग जाती हैं बेटियाँ!

और उनके न रहने पर
प्यारी-दुलारी वासंती बयार सी
फूलों की मोहक सुगंध सी
प्रेम की मीठी छुअन सी
अपनी स्मृतियों में सदा
माँ-पिता को जीवित रखती हैं बेटियाँ!
पीहर में बेटी का
ससुराल में बहू का
मन से कर्तव्य निभाती हैं बेटियाँ!

पिता!

हर पिता की तरह
मेरे पिता भी थे
नेकदिल इंसान
जिये सदा
अपने-परायों के लिए,
बाँटते रहे
दुख-दर्द सबका
अपना सबसे छिपा कर
बने रहे विषपायी
नीलकंठ!
अब सोचती हूँ
इंसान इतना भी
अच्छा न हो
कि बेहद अपनों के
पराये बनने का
स्वयं को छले जाने का दर्द
अपने में समेटे
यूँ एकाएक
चला जाये वहाँ
जहाँ से
बुलाने पर भी लौटता नहीं कोई।

सुनो पापा!

सुनो पापा!
जिस घर-आँगन से
मुझे मिली थी मेरी पहचान,
आपके और माँ के
हिस्से की धूप-छाँव,
जिस घर की
ईंट-ईंट पर लिखी है
अमिट इबारत
आप दोनों के रक्त-स्वेद की
आज भी वो घर
देखता है राह दोनों की,
मैं जाती हूँ वहाँ
घर की हर चीज को छूती हूँ
पाती हूँ उनमें आपका/माँ का स्पर्श,
निहारती/दुलारती हूँ
उन पुस्तकों को
जिनमें बसे हैं प्राण आपके,
उन्हें सहेजती, सँवारती
धूल झाड़ कर करीने से रखती हूँ
उनके बीच आपके लिखे
मिलते हैं कुछ पृष्ठ

उन्हें पढ़ती और सोचती हूँ
इनका कहाँ और कैसे
उपयोग करूँगी आपके लिखे को
प्रकाशित करने में,
और माँ की वो अलमारी
जिनमें हैंगर में लटकी और रखी साड़ियाँ
इन्हें छूती हूँ
कभी-कभी पहनती हूँ
और माँ के स्पर्श को जीती हूँ,
घूमती हूँ पूरे घर में
ये घर
पहले भी आपसे था
अब भी आपसे है
और आपसे ही रहेगा,
इसके गेट पर लगा नामपट्ट
मेरी अंतिम साँस तक
नहीं बदलेगा,
ये घर आपकी पहचान है
और मेरी पहचान आपसे है,
आप दोनों की बेटी हूँ मैं!
यहाँ आना
मेरे लिए तीर्थ है।

खो गया सब.....!

मेरे दिन/तारीखें
मेरी उपलब्धियाँ
हो गई हैं महत्वहीन
खो गई हैं उन्हीं के साथ
जिनमें जगा था
मेरे होने से
अपनी पूर्णता का अहसास,
स्मृति के समुद्र में समाये
अपने दिन/तारीखों/उपलब्धियों के साथ
बस मैं हूँ और वे
जो खो गये हैं
पर हैं स्मृतियों में
मेरे साथ आज भी।

दो जोड़ी आँखें

रोशनी की पगडंडी पर चलते-चलते रुकना
इधर देखना उधर देखना थोड़ा सा ठिठकना,
संग चल रहा कोई मेरे बार-बार यह लगना
दो जोड़ी आँखें नित देखें नहीं है कोई सपना।

•••••

मन बावरा ढूँढ रहा है किसी बहुत ही अपने को
माँ की ममता हो दिल में और प्यार पिता का हो,

दे न भले ही कुछ भी थोड़ा समय हो उसके पास
किसे कहूँ? मन जीना चाहे इक ऐसे सपने को।

•••••

रखें हैं तुम्हारे लिखे पत्र सहेज कर आज भी
जिनमें हुआ करती थी जमाने भर की बातें,
आज नहीं हो मेरे जन्मदाता तुम इस जग में
अब वही पत्र तुम्हारे मेरे माँ-पिता बन गये हैं।

•••••

भँवर

बेचैनी के
जिस भँवर में
घूम रही हूँ
वहाँ तुम जरूरी थे
पर नहीं हो,
जो हैं
वे हैं ही नहीं
दूर-दूर तक
मेरे आसपास
कहीं भी.....!!!!!!!

कैसा जन्मदिन?

दे रहे
शुभकामना सब
अपने-पराये
आपके आशीष बिन
कैसा जन्मदिन?
सर्वप्रथम
था फोन आता
और तब आते स्वयं तुम,
अब न तुम हो
और न ही दिन हैं वो,
हर दिन जैसा
आज भी लगता
रह-रह मन में
फाँस सी गड़ता,
बच्चा बन खूब खिझता
मचल-मचल कर
चिढ़ा-रुला कर
दुख और बढ़ाता
अब जन्मदिन!

पापा को याद करते हुए

कल
बहुत दिनों बाद
सुबह मिली
मुझे देख कुछ खिली,
बोली उदास होकर
तुम्हारे पापा
मुझसे नित्य मिला करते थे
गेट का ताला खोल कर
इधर-उधर, देश/समाज/साहित्य
घर-संसार और तुम्हारी
कितनी ही बातें करने के बाद
तब तुम्हारी माँ संग
सुबह की चाय पिया करते थे,
फिर बरामदे में बैठ
सर्दियों की गुनगुनी धूप में,
गर्मियों की
सुबह-सुबह की ठंडक में
साहित्य संवाद किया करते थे,
बारिश होने पर
बरामदे में आयी
बूँदों और ओलों को देख
अपनी नातिन को पुकारते
फोटो खींचने और ओलों को
कटोरी में भरने को कहते,

जब बन जाते
धीरे-धीरे वे पानी
तब वो पूछती
“ओले कहाँ गये चैकड़ी पापा!”
उन दोनों की
बाल सुलभ सरल बातें सुन
मैं भी मन ही मन मुस्कराती
उनके संग बैठी रहती थी,
अब भी
मैं नित्य आती हूँ
गेट भी खुलता है
पर वो सौम्य मुस्कान लिए चेहरा
उन्हें चाय पीने को कहती माँ
शरारतें करती नातिन
कोई भी तो नजर नहीं आता,
तुम्हीं बताओ अब किसके संग बैठूँ
किससे कहूँ अपना सुख-दुख?
मुझसे मिलने अब कोई नहीं आता
जो आते हैं
वे सब कुछ करते हैं
पर मुझसे बोलते तक नहीं,
बताओ सही है क्या भला यह?
कभी तो
अपने पापा की तरह
मुझसे मिलने
“उत्तरगिरि“ में
आओ न सुबह-सुबह....!!

एफ०आर०आई० देखते हुए

एफ०आर०आई०
पुण्य धरा सी
कर्मस्थली मेरे पापा की,
साध थी बहुत दिनों से देखने की
उसे पास से अनुभव करने की
उस जमीन के स्पर्श की
जिस पर वर्षों
मेरे पापा आते-जाते रहे
अपने सरकारी सेवाकाल में...!

आज जब
अचानक आया मन में वहाँ जाऊँ
तो बेटी के साथ चल पड़ी
ट्रेवर रोड की ओर,
तब सामने थी एफ०आर०आई०
ज्यों प्यासे को मिले पानी
कुछ ऐसी थी मन:स्थिति
क्या देखूँ क्या न देखूँ.....!!

वो सीढ़ियाँ
जिन पर चढ़ कर
जाते थे पापा
अपने हिंदी विभाग में,
वहाँ बैठ कर
उनके पैरों के स्पर्श को जिया मैंने
दीवारों को छूकर लगा
मानो छुआ हो पापा को,
एक-एक कर कई चित्र

आते रहे आँखों के सम्मुख
जिसमें दिखते रहे
वे काम करते/चलते/आते-जाते....!!!

वो कैंटीन
लौटते हुए जहाँ से लाते थे
ब्रेड और लेमनचूस की टॉफियाँ
वहाँ बन गया छात्रावास,
बदल गया बहुत कुछ
पर अब भी बाकी है
जो नहीं बदला
लोगों का इसके प्रति आकर्षण....!!!!

तीर्थ बहुत हैं
जहाँ जाते सब दर्शन/पूजा को
पर मेरे लिए तो
यह एफ०आर०आई०
सबसे बड़ा तीर्थ है
इसके बारे में सोच कर
यहाँ आकर पवित्र हो जाती हूँ मैं!
अपने पापा की कर्मस्थली में आकर
असंख्य पुण्यों का सुफल पा लेती हूँ मैं....!!!!

नमन कर यहाँ
पुनः आने का वादा कर
पापा से मिल घर लौटती हूँ
जो पाया आज यहाँ आकर
वह जीवन में तीर्थों से मिला
पुण्य/सुफल है मेरे लिए.....!!!!!!

खड़ी हूँ

छह वर्ष पूर्व
आज ही के दिन की
स्मृतियाँ सजीव हो
आँखों के सम्मुख
व्यथित कर रही हैं मुझे,
जब हर काम के लिए
मुझे प्रतिपल
पुकारने वाली मेरी माँ
प्राणहीन हो भूमि पर
चुपचाप लेटी थी,
आँखों में आँसू भरे पापा
तुम्हें अंतिम विदाई देने की
पारंपरिक रीतियाँ
विह्वल हो निभा रहे थे,
और मैं
जी भर कर
तुम्हें देख अपनी आँखों में
समेट लेना चाहती थी,
तुम्हारी विदाई करके माँ
आज भी
उसी मोड़ पर खड़ी हूँ एकाकी
चुपचाप तुम्हारी
स्मृतियों में खोयी हुई मैं!
तुम देख रही हो न...!!!!!

लौट रही हूँ

सूने मायके का
ताला खोल कर
बैठ गयी हूँ
तुम्हारी यादों की गलियों में
भटक रही हूँ
दीवारों/दरवाजों को
छू-छू कर तुम्हारे स्पर्श को
माँ मन में जी रही हूँ,
चाय बना कर
पीने बैठी हूँ
तुम्हारी और पापा की
बातें याद कर हँसती
तो कभी गुमसुम हो रही हूँ,
तुम्हारी साड़ी/स्वेटर पहन
हाथ में पापा की किताब लिए
मैं दोनों की सुरभि से सुरभित
हो मग्नमना
इधर-उधर डोल रही हूँ,
सब झाड़ा-पोंछा
करीने से सहेजा,
आप दोनों से मिल
आम/नाशपाती के पेड़ों से
कस के गलबहियाँ कर
फिर मिलने का पक्का वादा कर
आपके आशीर्वाद से सराबोर हो
दुखिया मन को समझा-समझा कर

ताला बंद कर रही हूँ,
किसे कहूँ?
क्या खोकर और क्या पाकर
सुख-दुःख में लिपटे
भरे मन के साथ
आप दोनों को संग लिए
अपने घर से फिर
अपने घर में लौट रही हूँ।

पूरक एक दूजे के

माँ थी
तो पापा थे
पापा थे
तो माँ थी
पूरक थे दोनों एक दूजे के.....!

जब दोनों थे
हँसते दिन और रातें थीं
हवायें घर की
देहरी/आँगन में गीत गाती थीं.....!

जब दोनों थे
त्योहारों का घर में बसेरा था
आते थे पंछी
घर के बगीचे में शोर मचाते थे
नटखट बच्चों की तरह
नृत्य करती थी भोर
जैसे उनके साथ में.....!

जब दोनों थे
गूँजते थे गीत और कविताएँ
घर के कोने-कोने में
आते थे अतिथि
बनती थी पकौड़ियाँ और चाय.....!

जब दोनों थे
फलते थे आम/ आड़ू/ नाशपाती
लीची/ चकोतरे बगिया में,
पालक/ मेथी/ धनिया/ मूली
पोदीना/ अरबी फलते थे क्यारियों में
मिलते थे थैले भर-भर,
अरबी के नलों से बनती थी बड़ियाँ
लहलहाती थी बगिया.....!

खिलते थे
विविध रंगों के गुलाब
गेंदे, गुलमेहंदी, बोगनविलिया,
जीनिया, थ्युजा और गेट के दोनों ओर
अशोक के वृक्ष थे पहरेदार से
माँ-पापा के घर "उत्तरगिरि" में.....!

जब दोनों थे
बरसता था आशीर्वाद
मिलती थी स्नेह-छाया
हर दिन, हर मौसम में.....!

ईश्वर ने भेजा संदेश
माँ को अपने पास बुलाने का

तो उनको विदा कर
पापा भी ढूँढने लगे थे मार्ग
जल्दी माँ के पास जाने का.....!

पूरक थे
जीवन भर एक दूजे के
तभी तो डेढ़ माह बाद ही
साथ देने माँ का पहुँचे पापा भी
पूरक बने हैं मृत्यु के बाद भी
तारों के मध्य दोनों
साथ-साथ चमकते हैं
मुझसे नित्य बात करते हैं.....!

दुख के अंधेरों में
सिर पर हाथ रख
मेरा साहस बनते हैं तो
खुशियों में आशीष-वृष्टि कर
नवगीत रचते हैं
मेरी श्वास बन साथ-साथ चलते हैं.....!

इसी से
नहीं करती मैं
उन्हें स्मरण अलग-अलग
मातृ दिवस, पितृ दिवस पर.....!
हर दिवस उन्हीं की स्मृतियों के
धनक संग ढलते हैं
माँ-पापा आज भी
मेरे हृदय में बच्चों से पलते हैं.....!!!!!!

परछाई

मैं
बचपन से डोला करती
माँ-पापा के संग-सँग
बन कर उनकी परछाई
उनकी हिम्मत से जो पाया
बना वही पाथेय अमोल
मेरी जीवन भर की यही कमाई
संघर्षों के सम्मुख तनना सीखा
संघर्ष बिना है जीवन फीका
वही समझ पायेगा इसको
जिसने संघर्षों में जान लगाई
आज
बिना उनके सोच रही हूँ
बिना प्रेरणा के जीवन
जीना कैसे पूछ रही हूँ
लगता ऐसे जैसे अब तो
मेरा साथ न देगी मेरी परछाई
नभ में चमकते तारों में से
जैसे कोई मुझे बताता
चक्र सदा ही चलता रहता
बस कुछ चित्र बदल जाते है
माँ बन कर क्या समझ न पाई
अब तेरी बेटी डोल रही सँग
बन कर तेरी ही परछाई।

मुझे सुलायेगी?

उम्र बढ़ेगी जैसे जैसे
नींद भी कम आएगी
तन्हाई की मार मेरी
ख़ुशियाँ ले जाएगी
दिन की जागी आँखें
जब रात नहीं पाएँगी
सोच रही हूँ बैठे बैठे
लोरी गा सिर सहला
मुझे सुलाने मेरी माँ
क्या स्वर्ग से उतर कर
मेरे सिरहाने बैठ कभी
फिर से मुझे सुलायेगी?

माँ

माँ का साहस
बढ़ाते बेटी बेटे
देकर साथ।

दुख में खड़े
बेटी बेटे साथ
बड़भागी माँ।

चरण माँ के
छूते ही उपलब्ध
पुण्य तीर्थों का।

नहीं भूलती
माँ देना आशीर्वाद
बच्चों को कभी।

छोटी चीजों से
सहेजे बचपन
स्व संतान का।

मिले भाग्य से
मनुहार करती
आँगन में माँ।

उससे पूछो
आहत है कितना
जिसकी न माँ।

निर्धन बड़ा
धनी चाहे कितना
मातृविहीन।

मिलती नहीं
चली जाये अगर
रूठ कर माँ।

जरा सुनो माँ
कभी सपनों में आ
तो बात करें।

चली गई थी
बिना कुछ कहे ही

वो कह मुझे।

जीवन बना
स्मृतियों की गठरी
खोलती नित।

करती बातें
कितनी ही तुझसे
मन ही मन।

तारों के मध्य
ध्रुव तारे समान
चमक रही।

आशीष भरा
हाथ रख दे मेरे
सिर पर माँ!

बच्चे उदास
माँ भूलती अपना
रुदन हास।

पिता

बच्चों के बीच
मनाया जन्मदिन
प्रसन्न पिता।

जीवन दिशा
दे संवारते रूप
सर्वदा पिता।

एक बार तो आओ माँ...!!!

कुछ
आड़ी तिरछी रेखाएँ है
रंग भरती हूँ
तो मिट जाती हैं...!

कुछ
टूटे फूटे शब्द हैं
लिखती हूँ
तो छिटक जाते हैं....!

कुछ
जागी आँखों के सपने हैं
देखना चाहती हूँ
तो टूट जाते हैं....!

कब से
जागी जागी आँखें हैं
सोना चाहती हूँ
नींद जाने कहाँ खो जाती है.....!

मेरे रंग समेटने
मेरे शब्द संजोने
मेरे सपने सहेजने
मेरी नींद लेकर
मेरे सपनों में
पापा के संग
एक बार तो आओ माँ....!!!!!

पिता

दीप बन कर जल रहे थे
दीप बन कर जल रहे हैं,
जीवन में आज भी पिता
संग-संग मेरे चल रहे हैं।

वो संत थे कोई या
इस धरा के चाँद थे,
बड़ा कठिन है प्रश्न
पिता मेरे अभिमान थे।

नहीं पढ़ी ध्यान से मैंने
रामायण और गीता
माँ पिता का जीवन ही
लगा मुझे किताब सरीखा

पढ़ते हुए कभी खत्म न हो
पिता वो महाकाव्य है,
पर जो निरंतर पढ़ सके
सबका कहाँ सौभाग्य है!

मातृ दिवस पर

मेरे लिए हर दिन मातृ दिवस...
हर दिन, हर पल साथ रहती है माँ
अपना हर कदम मेरे कदम के साथ
रखते हुए मेरे साथ-साथ चलती है माँ
वो यहाँ हो या वहाँ, मुझे तो सब जगह
दिखाई देती है माँ....
सुनाई देती है माँ.....

माँ का आँचल देता सबको सुखद हवा के झोंके।
अला-बला जो भी आ जाए आगे बढ़ कर रोके।।

माँ से बड़ा नहीं कोई धन रखने इसे संभाल।
हर मुश्किल में साथ रहे पड़े न कभी अकाल।।

जीते जी जान लो कैसी ओर क्या होती है माँ।
नहीं तो बस पछताओगे जब चली जाएगी माँ।।

तारों के संग बैठी माँ कहती उनको संकेत से।
वो देखो बेटी मेरी नित मुझे निहारती दूर से।।

ढलता सूरज बोला मुझको दो अपना संदेसा तुम।
कल ही माँ तक पहुँचा दूँगा रहो न यूँ अपने में गुम।।

माँ की दुआएँ एक कवच बन कर।
रखती सदा हाथ संतान के सिर पर।।

.....हर माँ ऐसी ही तो होती है।

काजल की डिब्बी

बुरी नजर न लगे
किसी की भी
माँ लगाया करती थी
दिठौना कान के पीछे
या माथे के बायीं ओर
नियम से छोटे भाई के,
साथ-साथ बताती जाती
बुरी नजर
छोटे बच्चे को
कैसे नुकसान पहुँचाती है
और काजल
उस बुरी नजर को
बच्चे तक आने से रोकता है,
तो मैं पूछा करती
तुमने मुझे भी ऐसे ही लगाया
छोटे में बचाने को काजल?
तो माँ प्यार से
सिर पर हाथ फेरते हुए कहती
और नहीं तो क्या...?
अपनी चिरैया को
काजल न लगाती तो
ईश्वर से क्या कहती?
और सुन!
दिठौना ही नहीं

तेरी इन बड़ी-बड़ी
मछली जैसी प्यारी आँखों में
रोज काजल भी लगाती थी,
तभी तो मेरी सोना!
तुम्हारी आँखें इतनी सुंदर हैं...!
जब
तुम भी
मेरी तरह माँ बनोगी
तब तुम भी अपने बच्चों को
ऐसे ही दिठौना
और आँखों में काजल लगाना..!!
माँ की
ये परंपरा मेरे साथ भी
मेरे बच्चों के लिए चली,
और आगे भी
बच्चों के बच्चों के साथ भी चलेगी...!!!
आज
माँ नहीं
पर उनकी वो काजल की डिब्बी
मेरे पास है
जो
नानी की थाती-परंपरा स्वरूप
मैं अपनी
चिरैया और उनकी नातिन को सौंपूँगी
जब वो माँ बनेगी
नानी की काजल की डिब्बी
सहेजेगी आगे की पीढ़ी के लिए।

जब तक.....!

जब तक रहती साथ लुटाती रहती आशीर्वाद
जा तारों के बीच निभाती यादों में अब साथ।

समेट कर रख लिया यादों को अब तस्वीरों में
जब चाहती हूँ मिलना इनसे बात कर लेती हूँ।

सब कुछ होते हैं.....!

माँ की कोख सी
सुरक्षित जगह कोई नहीं लगती
जन्म लेते ही
सबसे पहले जिस चेहरे को देखा हो
वह कभी नहीं भूलता
जन्म लेते ही
जिस आवाज को सुना हो
वह कभी नहीं भूलती
कुछ चेहरे/कुछ आवाजें/कुछ शब्द
कुछ गीत /कुछ बातें
कुछ गलियाँ/ रास्ते
एक घर/एक आँगन
माँ-पिता के ममता भरे हाथ
उनकी वो दो उँगलियाँ
जिन्हें पकड़ कर
चलते रहे टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर
वो कंधे
जिन पर बैठ कर देखे कई मेले

कहीं भी/कभी भी
अकेले/भीड़ में भी
सदा साथ रहते/ चलते हैं
उनके साथ भी
उनके जाने के बाद भी,
माँ-पापा अपने बच्चों के लिए
नदी/समुद्र, अवनि/अंबर
जंगल/पहाड़ सब कुछ होते हैं....!!!!

पापा

सदा
जादू की छड़ी
बन कर रहे पापा!

दुख
अपना सबसे
छिपाए रहे पापा!

लाठी
माँ की बने
अंत तक डटे रहे पापा!

प्रलय आया
चल दिए चुपचाप
बिना कुछ कहे पापा!

हल
हर मुश्किल का
नभ से करते रहे पापा!

नभ से
आशीर्वाद अपना
सदा बरसा रहे पापा!

आधियों में
देगा कौन सहारा
कुछ तो कहो पापा!

धूप में
अब पाँव जलते
आकर छाया बनो पापा!

भीड़ में
रह गई अकेली
मेरे मित्र बनो पापा!

याद बहुत
आते हो मुझको
पर किससे कहूँ पापा!

आया ईश संदेश
ले गया सब समेट
अब तस्वीर बन गए पापा!

लुट गई थी
मन और घर सुनसान
विदा कर दिए थे माँ-पापा!

चले गए
क्यों मुझे छोड़ कर
सही नहीं किया पापा!

पिता

जब तक
रहती है माँ
पिता रहते हैं निश्चिंत
हर तरह की जिम्मदारियों से
कब किसका जन्मदिन
मुंडन, विवाह, विवाह की वर्षगाँठ
सब याद रखती है

कहाँ, किसको, कब
क्या देना है
पिता के साथ
सब निभाती जाती है

पर जब माँ
असमय छोड़ जाती है
साथ पिता का
तो हर समय निश्चिंत
रहने वाले पिता
चिंतित रहने लगते हैं
माँ की ममता और जिम्मेदारियाँ
ओढ़ कर माँ की तरह

अपने सब बच्चों
बेटी-बहुओं
नाती-पोतों के

जन्मदिन, विवाह जयंती
सब याद रख
शुभकामनाएँ-शगुन
बरसाने लगते हैं

माँ की कमी न लगे
किसी को भी
इसके लिए
अपने दुःख को छिपा
बतियाते रहते हैं
पर पिता की
अबोली ममता का मोल
अपनी ही बनाई
दुनिया में मगन
बच्चे कहाँ समझ पाते हैं

वे तो बस
उनके जाने के बाद
दीवार पर
उनकी तस्वीर लगा
माला चढ़ाते हैं
उनकी ममता
तस्वीर के काँच में कैद
देखती रहती है.....!!

माँ तो माँ होती है

माँ जो भी कहता उसकी
जिह्वा पावन होती है,
माँ गंगा बन बहती रहती
बच्चों के हित जीती है,
अपने स्वप्न त्याग कर सारे
सबके स्वप्न जीती है,
सबसे पहले वह जागती
सबको सुला सोती है,
माँ तो माँ होती है।

मुझे पता है

मुझे पता है
सबसे पहले मुझे
तुम्हीं ने देखा होगा
और यकीनन
मैंने भी तुम्हें ही
सबसे पहले देखा होगा,
वो पहली दृष्टि
तेरी और मेरी
रखी है कहीं
यादों की गठरी में
जो पहले तेरे पास थी
अब मेरे पास है।

पौधा

लगाती है
एक पौधा और
पालपोस कर उसे
सुदृढ़ पेड़ बनाती है माँ!
एक दिन वही पेड़
अपनी छाया में
बैठा कर उसके कानों में
कहता है
माँ तुम सुरक्षित हो
मेरी बाहों में
जैसे मैं कभी सुरक्षित था
तेरे आँचल तले।

पम्मी

एक शब्द
"पम्मी"
अतल की गहनता से
निकल कानों में
अनवरत वीणा की तरह
झंकृत होता रहता है
इसे बोलने वाली
मेरे आसपास जो रहती है।

माँ का प्रेम

प्रेम
माँ का
अतुलनीय है
फिर भी तोलते हैं,
विस्मृत कर देते हैं ऐसे
जैसे कभी वह
मिला ही नहीं था...!!!!

एक शब्द नहीं माँ

माँ
एक शब्द नहीं
संसार है
भावनाओं का
अथाह सागर है
त्याग का
अगाध भंडार है
उसका संसार
घर और बच्चों से
आरंभ होता है और
वहीं समाप्त होता है।

कुशल वैद्य

एक कुशल
वैद्य होती है माँ
बच्चों को जरा सा कुछ होते ही
अपने घरेलू नुस्खों का पिटारा,
जो उसे अपनी
नानी/दादी/माँ से विरासत में मिला,
खोल कर बैठ जाती है,
तब तक चैन नहीं लेती
जब तक बच्चों की
हँसी लौट नहीं आती है।

कुछ माएँ....!

कुछ माएँ
सारी उम्र अपने बच्चों के
दो मीठे बोलों के लिए तरस जाती हैं,
उनके घर आने की झूठी आस में
घर के गेट पर उसकी
आँखें पथरा जाती हैं,
आस का दीप
अपनी पलकों में समेट
अनंत में समा जाती है,
वही बाद में दीवार पर लगे
माला चढ़े फ्रेम में,
मातृदिवस पर
फेसबुक/वाट्सअप
इंस्टाग्राम/ट्विटर पर छाई रहती है।

संजीवनी बूटी

गीता/रामायण
रामचरितमानस सरीखे
सभी ग्रंथों को अपने में
समाहित किए
पिता के होने की
बड़ी सी बिंदी और
माँग में सिंदूर सजाए
पूरे घर में इधर से उधर
डोलती ही रहती हैं
घर की संजीवनी बूटी है माँ....!!!!!

अस्तित्व

माँ के बिना
पिता का और
पिता के बिना माँ का
अस्तित्व नहीं होता,
एक प्राण
दो शरीर होते हैं,
तभी तो
एक के बिछड़ते ही
दूसरा स्वयं ही उसमें
समाहित हो जीने लगता है
जीवन उसका।

गुलमोहर पिता!

गुलमोहर से मेरा
रिश्ता है बहुत पुराना
यह प्यारा सा नाम
मैंने अपने पिता से जाना,
बचपन में जाती थी
पैदल उनके साथ जब-तब
बैंक, डाकखाने और
एफ०आर०आई कार्यालय में,
मार्ग में आते वृक्ष-पौधे
सबके नाम बताते चलते थे
यह रीठा, बोगनविलिया
नीम, तुन, शीशम, कीकर, थ्यूजा,
यह पीले फूलों वाला
अपनी आभा बिखेरता अमलतास
लाल रंग के फूलों से लदा
राजा सा दिख रहा ये गुलमोहर,
कहते हैं यह वृक्ष देखो
पीले और लाल रंग भरते प्राण
जीवन में सबके सदा
मिटा संताप, करते दुखों का निदान,
गुलमोहर है मेरे पिता सा
अपने पुष्प बिखरा देता है आशीष
अमलतास, गुलमोहर दिखते जहाँ
सदा नवाती मैं हर्षित हो शीश।

मेरे पापा!

मुझे गढ़ने वाले
मेरे कुंभकार पापा!
जीवन के हर मोड़ पर
आप बहुत याद आते हो...!

चलते-चलते
जब थकने लगते हैं पाँव
ईश्वर के संसार से
आकर मेरे पास बैठ जाते हो...!

बचपन की अठखेलियाँ
बचपन के किस्से-कहानियाँ
नटखट शैतानियाँ मेरी
सुना-सुना कर हँसाते हो...!

माँ के संग
स्मृति के गलियारे से
जब-जब मेरे मन के
घर-आँगन में आते हो
चम्पा/चमेली/गुलाब/हरसिंगार की
सुगंध से सुवासित कर जाते हो.....!

घेर लेती हैं जब
निराशाएँ चारों ओर से
जकड़ लेता है अदृश्य
कोहरा अपनी मजबूती से
आकर आप ही उनसे छुड़ाते हो...!

धर्म/ज्ञान, संघर्ष
चुनौतियाँ/आत्मविश्वास
हर्ष/विषाद, मातृभाषा प्रेम
सबकी परिभाषाएँ मैंने
जानी/समझीं हैं खेल-खेल में आपसे...!

मेरे लिए तो आप
ज्ञान के अथाह पुंज हो
भगवद्गीता, उपनिषद, पुराण
सांख्य,योग,न्याय, मीमांसा
रामायण सभी कुछ आप हो.....!

देखा नहीं ईश्वर को
बस ईश्वर के रूप में
देखा/माना/समझा है आपको
जीवन का, सृष्टि का
आदि और अंत भी है आपसे....!

जो जन्मा नहीं
उसकी मृत्यु भी नहीं
जो अजर है, अमर है
जो परम शक्ति अनुभूत पर अदृश्य है
वो परम,पुण्य शक्ति आप हो....!

यहीं थे, यहीं हो और
अब भी मेरे आसपास हो
मेरे पापा! कैसे कहूँ?
केवल आप ही मेरे सर्वशक्तिमान
अभिमान/स्वाभिमान
भीड़ भरे संसार में मेरी पहचान हो.....!!!!

मेरे पिता

मेरे पिता, मेरा आधार
करूँ उनके सपने साकार।

कुंभकार सम गढ़ा मुझे
दिया अनूठा एक आकार,
मैं तो थी एक कोरा कागज़
दिए सार्थक भव्य विचार।

जहाँ कहीं गिरी मैं अटकी
सदा हाथ उनका ही पाया,
घिरी अंधेरों में जब भी मैं
सदा उजाला उनसे पाया।

खेल-खेल, बात-बात में
ज्ञान सदा देते जाते थे,
कोई न मिलता था खेलने
मित्र मेरे वे बन जाते थे।

कितने दिन औ कितनी रातें
सोये बिना ही उन्होंने बिताई,
रोग ने था जब मुझको घेरा
माँ-पापा ने दुनिया भुलायी।

रह गये उनके सपने बाकी
उन्हें ही देना अब आकार।

माँ

पूरे घर का काम समेट कर
थकान से चूर
सुस्ताने को लेटी माँ
बेटी के आते ही
फुर्ती से रसोई में बेसन, सूजी ढूँढ
पकौड़ी-हलवा बनाने लगती है!

सबके सामने चुप रहने वाली माँ
बेटी के आते ही
उसके सम्मुख अकेले में
मुखर हो उठती है!

कुछ दिनों
मायके में रहने आई बेटी को
जाते समय माँ
अपने लिए शौक से लाये
साड़ी/सूट को
“ये रंग तुझ पर ज्यादा खिलेगा”
कह कर, जबर्दस्ती बैग में
रखने लगती है!

अकेले होने पर
अपनी पुरानी स्मृतियों में
डूबने-उतराने के लिए
अपनी माँ और पिता के
लिखे पत्रों के पुलिंदे को

जिसे रामचरितमानस
गीता से भी अधिक
पवित्र मान सहेजे रखती है
उसे खोल कर कोई पत्र निकाल कर
पढ़ने लगती है माँ!
कोई आहट होते ही
झट से समेट कर
चेहरे पर हँसी ओढ़ लेती है!

बेटी के विवाह का एल्बम
खोल कर बैठ जाती है
मुद्रिका समारोह से
देखना आरम्भ करती है
सगाई, महिला संगीत
बारात, वरमाला की तस्वीरें
देखते हुए मुस्कराती रहती है,
फेरों की तस्वीरें देखते हुए
गम्भीर होती जाती है,
आँखों में आँसू भर जाते हैं
जो विदाई की तस्वीरों को
देख ऐसे बहते हैं कि
रोके नहीं रुकते हैं!

धूप-छाँव सी
होती है हर माँ!
अपने बच्चों के दुख में
शीतल छाँव बन जाती है
बच्चे अपना सुख-दुख

उँडेल कर माँ के सम्मुख
निश्चिंत हो जाते हैं!

सागर से अधिक
गहरी माँ के हृदय की
कोई थाह नहीं ले पाता,
सबके मन की
समझने वाली के मन को
कोई जान नहीं पाता!

स्नेह के दो बोलों से ही
चल पड़ती है
उसकी उदास दुनिया,
उन्हीं दो बोलों में ही
पहुँच जाती है वो खुशी से
सातवें आसमान पर!

बड़ी भोली, बड़ी सलोनी
ममतामयी होती है माँ!
बिन बोले, बिन कहे
समझ जाती है
बच्चों के मन की,
पर कह कर भी क्या
कोई समझ पाता है
माँ के मन की बात!
इसी से कभी-कभी
होती है माँ उदास!

तेरे जाने के बाद

तेरे
अधरों का
वो पहला चुंबन
जो अंकित हुआ था
मेरे माथे पर
जन्म के बाद
आज भी स्पर्श उसका
संभाल रखा है माँ!
तेरे जाने के बाद....!!

माँ की पुण्यतिथि पर

नित्य
सवेरे का सूर्य बन कर
उदित होती है माँ!
करती है सकल विश्व को
प्रकाशित अपने तेज़ से
प्रकाश बन कर
समा जाती है हृदय में,
साँझ होते-होते

पहुँचती है पिता के पास,
कुछ क्षण विश्राम कर
पिता से बतिया कर
उभरती है पुनः नभ में
चाँद बने पिता के साथ
उनकी चाँदनी बन कर,
ताकि देख सकें हम
एक-दूसरे को,
कह सकें अपने मन में
समाया हर सुख-दुख,
इस तरह आज भी माँ!
पिता के साथ रहती है सदा मेरे साथ
कभी सूर्य
तो कभी चाँद बन कर,
समाहित हो गई है
प्रकृति के हर कण में,
माँ प्रकृति
नित्य दुलराती है
सिर सहलाती है
आशीष लुटाती है
जीने की आस जगाती है
मेरे संग हँसती-गुनगुनाती है
मुझसे नित बतियाती है।

माँ (सायली)

माँ
गीता रामायण
वेद और पुराण
नित गुनना
इसे।

••••

माँ
जन्म देती
प्रेम प्राण भरती
सँवारती सदा
जीवन।

••••

माँ
जिसके पास
वहाँ आशीष बरसता
सावन जैसा
सदा।

••••

माँ
त्याग देती
जीवन भी अपना
संतान हित
समझना।

••••

माँ को याद करते हुए

सारी दुनिया से
अपने लिए कुछ गिनती के पल बचा कर
सोचने बैठती है अपने बारे में
तो पाती है
वह तो कहीं है ही नहीं
उसका अपना कुछ भी नहीं
उसके सपने/पसंद
यहाँ तक की उसका अस्तित्व भी
कुछ भी तो नहीं रहे उसके पास,
भूल चुकी है सबकुछ
याद रहता है बस घर/ पति और बच्चे,
घर उसे अनुभव करता है
पति साथ देता है
पर वो भी नहीं झाँक पाता
उसके हृदय की अतल गहराइयों में
क्यों कि एक दरवाजा वह सदा बंद रखती है,
उसकी अनुमति के बिना
प्रवेश नहीं कर सकता पति भी,
बच्चे तो सदा रहते हैं
अपनी ही बनायी दुनिया में मस्त,
बस वह स्वयं ही कभी
खोलती है उस दरवाजे को
स्वयं से मिलती है और बंद कर लौट आती है
यह स्वयं से मिलना ही उसका
एक ऐसा अधिकार है जो वह किसी को नहीं देती।

पिता और राजकुमारी

पिता
राजा है
अपनी बेटी का
तभी तो
कंधे पर
अपनी राजकुमारी को
बैठा कर
करता जा रहा
उससे बातें
दुनिया/जहान की,
बता रहा
क्या-क्या घट रहा आजकल,
जंगल कम हुए
तो जानवर आ गए
शहरों में,
सफेदपोश जानवर
हो गए अधिक खूँखार,
आते हैं
कई-कई रूप बदल
नित नये भेष में,
डर मत

मेरी राजकुमारी!
तू पढ़ेगी/लिखेगी
समर्थ/सक्षम बनेगी
जो झेला
हमारी और बेटियों ने
उस आग को
अपने भीतर कभी
बुझने न देगी,
मिले कोई वहशी झपटता
किसी राजकुमारी पर
दरिंदे को मृत्यु देकर
हर बेटी की रक्षा की आवाज बनेगी
मेरी राजकुमारी
हर काल में
राजा का धर्म
पूरा करेगी.....!!!!!!

पापा!.....तुम से सीखे....!

जीवन के हर पल को
कैसे जीना है
फटे और उधड़े
रिश्तों को कैसे सीना है
यह कोई तुम से सीखे....!

छोड़ उदासी ओढ़ के अंबर
डाल दे अपना कहीं भी लंगर
संग लिए नदी/पर्वत/जंगल
कैसे उड़ना है
यह कोई तुम से सीखे....!!

सबके अपने
चंदा/सूरज/तारे
सुख/दुख/सपने
उनमें अपना कुछ
मेल मिला कर कैसे चलना है
यह कोई तुम से सीखे.....!!!

टूटे अंबर
या फट जाये वसुधा
चारों ओर चाहे मच जाये त्राहि
बाधाओं को बहला/फुसला
कैसे बढ़ना है
यह कोई तुम से सीखे.....!!!!

पिता की परी

पिता के
मजबूत कंधों पर
बैठी पिता की परी
गर्व से भरी,
धरा पर
पिता के कदम
पर वो उड़ रही आसमान में,
कह रहा पिता उसे धीरे-धीरे
सुन मेरी परी!
सारे काम तेरे करती है तेरी माँ!
पर जब वो थकेगी
उसके बाकी काम कर
उसके साथ
मैं तुझे घूमाऊँगा
कंधे पर बैठा
मेला दिखाने ले जाऊँगा
कर सके
तू असुरों से अपनी सुरक्षा
वो सुरक्षा के गुर सिखाऊँगा
पर, इस दुनिया में
डर कर नहीं जियेगी मेरी परी!
तेरे सपनों के लिए
तेरे हौसलों की उड़ान बन जाऊँगा!

चली गयी माँ

अंतस रहा पुकार
मुझसे कुछ कहे बिना
गलबहियाँ करे बिना
कहाँ तुम चली गयी माँ!

मच रहा हाहाकार
सूना हुआ मेरा संसार
नहीं रहा कोई आधार
छल कर चली गयी माँ!

छूटी गलियाँ बचपन की
छूटा घर का वो आँगन
जहाँ खेला करती तुम संग
छिप कर चली गयी माँ!

तीज-त्योहार कहाँ अब
जब तुम और पिता नहीं
मनबतियाँ किससे करूँ
खेल कर चली गयी माँ!

अब कोई मुझे न पुकारे
मेरी कोई राह न निहारे
रोऊँ नित साँझ सकारे
लौट कर आ जाओ माँ!

अंतस रहा पुकार माँ!
हो गयी मैं निराधार माँ!
सारी रात जागती रहती
लोरी गा मुझे सुलाओ माँ!

माँ!

स्वाद तेरे हाथों का माँ
अमृत जैसा लगता था
पेट भले ही भर जाता पर
मन कभी नहीं भरता था

रोज रूठना रोज मनाना
कितना अच्छा लगता था
चंदा जैसी गोल रोटियाँ
मक्खन अच्छा लगता था

कुछ मुँह पर भी लग जाता
कुछ हाथों में चिपका रहता
प्यार की डाँट मिले तब भी
तेरी गोदी में दुबका रहती

अब मैं कितनी बड़ी हो गयी
तुम तारों के संग रहती हो
खा ले लाली! समय हो गया
जैसे अब भी कहती रहती हो

सब कुछ है यहाँ पहले जैसा
पर, मेरे पास तुम नहीं हो माँ!
डाँट भी दे संग प्यार भी दे जो
अब तुझ सा कोई नहीं है माँ!

तुम्हीं से....

मेरे दिन और रात
शुरू होते हैं तुम्हीं से
मेरे जीवन के हर तार
जुड़े हैं तुम्हीं से,
सृष्टि के कण-कण में
हर ओर दिखाई देते
जहाँ धूप दिखाई देती
वहाँ छाया कर देते,
जब भी देखूँ मैं तुमको
लगे खड़ा है विधाता!
आकुल-व्याकुल मन मेरा
तेरे आँचल से लिपटा जाता,
तेरे यादों के मोती से
माला अनुपम गूँथी है
आधार यही अब मेरा
निधि मेरी अनूठी है,
कुछ ऐसा कर सकूँ जो
तेरे दूध का मोल निभाऊँ
कुछ स्वप्न रहे जो अधूरे
उनको पूरा कर पाऊँ,
जब भी जन्म मिले इस भू पर
मेरे मात-पिता ही बनना

अपनी बेटी को फिर से
अपने जीवन में चुनना,
मेरी माँ! मेरे पापा!
उस पार तुम खड़े हो
इस पार मैं खड़ी हूँ
हर दिवस है तुम्हारा
प्रेम-अर्ध्य लिए खड़ी हूँ.....!

पहला प्यार

जब आँख खुली तो गोद माँ की थी
सिर पर आशीष देता हाथ पिता का था,
मेरे रोने पर घबरा जाती थी माँ
जिस कंधे पर चिपक सुनती लोरी वो पिता का था।
मनुहार करके सजाती-धजाती थी माँ
उंगली पकड़ कर नित घुमाने ले जाते थे पिता,
दूध गिराती तो डपटती थी माँ
झट गोद में उठा छुप के टॉफी देते थे पिता।
दुनियादारी सिखायी माँ ने मुझे
संघर्षों से दो-दो हाथ कर विजय पाना सिखाया पिता ने,
दोनों के स्नेहाशीष ने मिल कर गढ़ा मुझे
हाँ! मेरे माँ-पिता ही मेरा प्यार हैं।

मैं तुझे फिर मिलूँगी माँ !

मैं तुझे फिर मिलूँगी
एक नये मोड़ पर,
तब तक तुम भी
एक नये रूप में
अवतरित हो चुकोगी
और मैं भी इसकी
तैयारी कर रही होऊँगी.....!

एक यात्रा
पूर्ण हो चुकी तुम्हारी माँ
और मैं अभी यात्रा के मध्य हूँ,
अगला जन्म
जब भी होगा हमारा
तुम प्रतीक्षा करना,

जिंदगी हमारी
पानी के रंग सी
इस तरह घुली-मिली है
कि जिस मोड़ पर भी मिलोगी
मैं तुम्हें पहचान लूँगी.....!!

कुछ वादे
इस जन्म में
किए थे हमने
अगले जन्म के लिए
और कुछ हर जन्म के लिए.....!!!

उन्हें पूरा करने
हमें तो बार-बार मिलना है
तुम्हें मेरी माँ
और मुझे तुम्हारी बेटी बनना है....!!!!
तभी तो कहती हूँ
जहाँ भी
जिस मोड़ पर खड़ी
तुम मेरी प्रतीक्षा करोगी
वहीं मैं तुझे मिलूँगी माँ!

जिस भी जन्म में
जो भी रह जायेगा बाकी
उसे पूरा करने
मैं हर जन्म में
तुझे मिलूँगी माँ!
और पूछती रहूँगी
अपने अंतिम समय में
तुम मुझसे क्या कहना चाहती थी माँ.....!!!!!

क्यों चले गये माँ!पा!

जब तक पापा और माँ थे
तब तक उनके ही इर्द-गिर्द
उनके ही आसपास
घूमती थी मेरी दुनिया,
और अब जब वे निराकार हैं
तब भी मेरी दुनिया
उनके ही इर्द-गिर्द
उनके ही आसपास
वैसे ही घूम रही है,
कोई खुशी अपनी
सबसे पहले तुम्हें बता कर
आशीष भरा हाथ
सिर पर अनुभव करने को
मन करता है,

दुख की बदलियाँ
मन में समेटे हुए
तुम्हारे कंधे पर सिर रख
बरस कर रिक्त होने का
मन करता है,

जानती हूँ
तुम निराकार हो
मुझमें एकाकार हो गये हो
पर इस मन को कैसे समझाऊँ
जो हर जगह तुम्हें
और माँ को ढूँढता है!
चित्र में तुमसे संवाद कर
वहीं तुम्हारे सम्मुख बरस कर
बिलकुल तुम्हारी तरह
अपनी लड़ाई लड़ने को
तैयार होता है।
पर एक शिकायत सदा रहेगी...
इतनी जल्दी क्यों चले गए माँ! पा!

आँचल

छूटी है
तेरी गोद माँ!
पर आँचल तेरा
जिसमें लिपटी है
सुगंध तेरी
बहुत संभाल कर
रखा है मैंने,

जब चाहती हूँ
तुमसे मिलना
तुम्हें अनुभव करना
घंटों बतियाना,
तो निकालती हूँ
अलमारी से तुम्हारी साड़ी

कभी हरी
तो कभी भूरी
तो कभी सिल्क की
लाल और पीली वाली,
उस पर फेरते हुए हाथ
खो जाती हूँ

उस समय में
जो साथ जिया था हमने
आती हैं याद सब
वो द्रौपदी के चीर से भी लम्बी
चलने वाली हम माँ-बेटी की बातें,

कभी
पहन लेती हूँ
तुम्हारी साड़ी और चूड़ियाँ,
खड़ी हो
दर्पण में स्वयं को देख

सोचती हूँ
तुम जैसी लग रही हूँ न!
तुम्हारी साड़ी के
आँचल को अपनी
उंगली पर लपेटते हुए
लगने लगता है
तुम्हारी उंगली पकड़े
आज भी मैं तुम्हारे साथ
चल रही हूँ माँ!

क्यों नहीं बताया?

भरे-पूरे संसार में
भरे-पूरे परिवर में
रिश्तों के बीच
सुख में सबके साथ
दुख में अकेली खड़ी हूँ...!
सुख में हँसना और
दुख में चुपचाप रोना सिखाया
पर तेरे बिना जिऊँगी कैसे
यह क्यों नहीं बताया?
नाराज हूँ बहुत मैं तुझसे माँ!

तुम कहाँ हो....!

समस्याओं में घिर कर
कभी घबराहटों में
तो कभी
अपनी ख़ुशियों को साथ
जीने की ललक में
भागती थी सदा
माँ के घर,

दरवाजा
खोलते पिता
सरप्राइज कह
उठा लेती थी
पूरा घर
सिर पर मैं....!

वो
कुछ पल
होते जीवन के सबसे
आनंद के क्षण....!
रुकना
चाहते हुए भी
अपनी
व्यस्तताओं के चलते
चली आती थी
अपने घोंसले में.....

तब
कहती माँ
आज कहने से
रूकती नहीं
कल रुकना चाहोगी
तो देख
होंगे नहीं
तेरे माँ-पा तब....!

अब
बढ़ती उम्र में
अपनी घबराहटों
खुशियों में
तुम्हारा
मजबूत कंधा
चाह कर
रुकना चाहती हूँ
तुम्हारे पास.....!

पर
बताओ
तुम कहाँ हो,
माँ.....!!!
तुम कहाँ हो,
पा.....!!!!

एक माँ

एक बहुत अच्छी माँ
जो जैसा सोचती हो
वही बोलती हो
बिना किसी
आवरण के
वही करती हो
जो बोलती हो
माँ होने के साथ
अपने बच्चों की मित्र हो

तभी तो
वे निसंकोच करेंगे अपनी बातें
समझेंगे
माँ के पास हैं
उनकी सारी समस्याओं के समाधान
अलादीन के जादुई चिराग की तरह

माँ
एक माँ होने से पहले
बेटी और बहन होती है
विवाह के बाद
पत्नी और बहू बनते ही
ओढ़ लेती है
असंख्य रिश्तों की चादर

नए जीवन का
सृजन कर
मातृत्व के
अलौकिक सुख को पाती है तो
संसार में सर्वत्र प्रेम ही देखती है

वात्सल्य का झरना
बहता रहता है
धाराप्रवाह
जीवन की अंतिम साँस तक

बेटी से आरंभ हुई यात्रा
माँ बनते ही
एक अंतहीन यात्रा बनती है
वह घर में रहे
बाहर काम करे
माँ की यात्रा
चलती है उसके साथ हर जगह

थमती है
उसकी साँस थमने पर
पर अपने
आशीर्वादों के साथ
करती रहती है यात्रा
अपने परिवार के
सदस्यों के साथ-साथ।

मातृ दिवस

माँ का
हर दिवस
तभी है सार्थक
जब हर बच्चा उसका
बने एक सच्चा इंसान....!

हो भरपूर मानवता से
माँ और मातृभूमि
दोनों के वास्ते
रखे प्राणों पर भी
खेल सकने का जीवट
करे रक्षा
सम्मान के साथ.....!

जो प्रकृति को दे प्यार
जो करे काम
हृदय में बसने को
भले ही न आए नाम
अखबारों में
कहीं भी
कभी भी...!

तब है माँ का
हर दिन सार्थक
हर दिन मातृ दिवस...!!!

तुझे दे रहे आवाज हैं!

तू यहाँ नहीं
पर संग चल रहे
तेरे अनकहे एहसास हैं

तू जहाँ भी हो
पर संग मेरे आज भी
तेरे अनछुए एहसास हैं

तू तारों बीच
रह रही, देख ले संग
मेरे भीगे भीगे एहसास हैं

तू साथ थी जब
गाती थी हवायें भी
अब तो चुप हर इक आवाज है

माँ! तेरे संग की
जो अठखेलियाँ
सुन ले द्वार खोल कर

तारों के संसार से
बेचैन सी बनी हुई
इधर उधर डोलती

तुझे दे रहे आवाज हैं
अधजगे एहसास मेरे
तुझे दे रहे आवाज हैं....!

धागा

आँधियों में
दरकने लगी है
पैरों तले की जमीन,
डूबने को है जहाज
और कप्तान भयभीत,

जिस आशीष और
बरकत के पवित्र धागे से
बुना करती थी
सुरक्षा कवच
अपने संसार के चारों ओर
वो तुम्हारा दिया
धागा टूटने को है,

आओ
फिर से माँ!
मैं खड़ी हूँ
तुमसे वो धागा
लेने के लिए
आँधियों का सामना
करने के लिए,

आओगी न माँ.....!!!!!

अचानक

निराशा के
गहरे भँवर में
डूबते-उतराते हुए
जैसे ही डूबने लगती हूँ

अचानक
वरदहस्त सा
एक हाथ
सिर पर अनुभव होता है

सैकड़ों सूर्य
उग आते हैं
अपनी अदम्य
आभा के साथ....!

मैं समझ जाती हूँ माँ-पापा!
ये तुम ही हो
जो जान जाते हो
मैं तुम्हें पुकार रही हूँ.....!!!!

जब भी

जब भी
किसी पिता को
झमाझम बारिश में
अपने बच्चे का
छाता बनते देखा,

जब भी
किसी माँ को
बच्चों की परीक्षाओं में
उन्हीं के लिए रात भर
उनके साथ जाग कर
स्वेटर बुनते देखा,

जब कभी
किसी कामवाली को
अपने काम के पैसे जोड़
बेटी के विद्यालय की
फीस भरते देखा,

जब कहीं
अपने आसपास
मृत्यु-शोक बिसरा
मानवता को छोड़
झूठी भक्ति में लीन हो
आनंद में झूमते देखा,

जब किसी
बेजुबान पशु को

जुबान वाले के हाथों
बेवजह मारे जाते देखा,

जब किसी
अशक्त, बीमार, असमर्थ
भूख से विचलित
वृद्ध-वृद्धा को उसके अपनों द्वारा
दी हुई सूखी रोटी
चाय और पानी के साथ
कठिनता से खाते हुए देखा,

जब किसी
निर्धन को पैसों की मार से
बीमारी में दवाइयों के
अभाव में मरते हुए देखा,

जब कभी
महलों से बनाये
बड़े से सजे-धजे घर में
एकाकीपन का दंश भोगते
माता-पिता को पाले हुए
कुत्तों के साथ बैठे हुए देखा

तब-तब
विचलित हुए अंतर्मुखी मन ने
थामी कर में लेखनी
निसृत होते रहे शब्द
और "यूँ बनी कविता"
जीवन के अनगिन पड़ावों के मध्य..!!!!!!

तुम्हें पता है न!

माँ!
पता है तुम्हें!
तुम्हारे जाते ही
पापा ने भी छोड़
दिया था जीना...!

जब भी वे
खाना लेकर बैठते थे
रो पड़ते और कहते
तेरी माँ के बिना
कभी खाया नहीं
अब कैसे खाऊँ.....!!

तुम्हें
याद करते नित
और जार-जार रोते
उन्हें कैसे धीर बँधाती
पापा के साथ मैं भी तो टूटी थी.....!!!

बहुत
प्रयास किए
उन्हें संभालने के
पर नहीं रुके पापा
उन्हें तुम्हारे साथ मिल कर
करवाचौथ की पूजा जो करनी थी.....!!!!

ना तुम
रुकी मेरे लिए
ना रुके पापा!
छोड़ गए
इस भरे-पूरे संसार में अकेली.....!!!!!

अब तो
नित्य ही अकेली
यहाँ आकर बैठती हूँ
दिखते हैं जो
दो तारे पास-पास
उन्हें ही माँ-पापा समझती हूँ
उन्हीं से मन की बातें कहती हूँ

बताओ...सुनते हो ना
मेरी सब बातें,
देखते हो न तुम दोनों मुझे
वहाँ दूर बैठे आसमान से,
इसी विश्वास पर ही तो
तुम दोनों के अधूरे सपने
पूरा करने के लिए जी रही है

तुम्हारा बेटी
मेरी माँ....
मेरे पापा.....!!!!!!!!

प्रतिज्ञा दिवस

चलेंगे
इस बार
जरूर तुम्हें लेकर
वैष्णो देवी और
अमृतसर के स्वर्ण मंदिर
वहाँ करना दर्शन
टेकना मत्था भी

कहा था एक
प्रतिज्ञा दिवस पर
मैंने माँ और पापा से,
काल का चक्र
कुछ ऐसा चला
ले गया साथ अपने
दोनों को चंद दिनों में...
सब कुछ आ रहा है

पर,
उस प्रतिज्ञा दिवस का कहा
इस बार तो क्या
कभी लौट कर न आया.....!!!

पापा की सातवीं पुण्यतिथि पर

....

अपने पापा को उनकी सातवीं पुण्यतिथि पर माँ के साथ साँस लेने की तरह श्रद्धा और आदर के साथ स्मरण करते हुए।

हर शब्द में गुँथे हुए
पर हो कहाँ छिपे हुए,

शब्द शब्द बोलता है
स्नेह उसमें डोलता है,

घूमती जिधर ये दृष्टि
सर्वत्र आशीष बोलता,

वसुधा हो या हो व्योम
छवि एक ही दिखे यहाँ,

यह जगत या वह जगत
तुम ही यहाँ तुम ही वहाँ।

विवाह जयंती पर

जैसे
त्योहारों पर
रसोई से उठती
पकवानों की सुगंध
मन को
आह्लादित करती है
वैसे ही
स्मृति के गलियारे से
यात्रा करते हुए
सुगंध स्मृतियों की
दे जाती संजीवनी
मन-प्राणों को बदल देती
उदास दिनों को
ताजगी देकर
ताजी हवा के झोंके में
उसी सुगंध की ताजगी में
रची-बसी
आपकी
विवाह जयंती पर
देती हूँ
अशेष शुभकामनाएँ
हर जन्म में
अपने
परिणय और प्रेम को जिएँ शाश्वत।

———————-

अचार

सारा तनाव
जीवन का
हो जाता दूर
जब लिपटती हूँ
माँ की यादों से
उनका बनाया
अचार खाते हुए।

राहें अलग अब होने लगी

(माँ के अंतिम क्षणों में पापा के भाव... जो माँ के जाने के डेढ़ महीने बाद करवाचौथ के दिन उनके पास चले गए थे)

लिख दिया
रब ने बिछड़ना
हमारे भाग्य में
आओ मिल लें गले
जी भर कर ओ मीत!
राहें अलग अब होने लगी...!

कहना-सुनना मेरा ।
क्षमा करना प्रिया!
कुछ कर न सका

मैं तुम्हारे लिए,
कहने-सुनने को शेष
बहुत कुछ है अभी
कैसे अब कुछ कहूँ मीत!
राहें अलग अब होने लगी....!!

तुम चली उस पार
इस पार मैं एकाकी खड़ा
आऊँगा शीघ्र ही
तुमसे ये वादा रहा
रह सकूँगा न तुम बिन
मन चलने को तुम संग मेरा अड़ा
कैसे जाने दूँ तुम्हें ओ मेरी प्रिया!
अपनी राहें अलग अब होने लगी.....!!!

अभी तुम चलो
फिर मैं भी आता हूँ
काम छोड़ कर जो चली
उनको पूरा करके मैं
करवाचौथ संग मनाने
वहीं मैं भी आता हूँ
मिलना मुझे तुम उसी मोड़ पर
जहाँ अपनी राहें अलग अब होने लगी....!!!!

सावन आया

मन के दबे हुए दर्द जगाने
फिर से बैरी सावन आया।

सूना आँगन सूनी बगिया
माना नहीं है कोई घर में
यादें कहती हैं बुला कर
हम भी तो रहती हैं घर में
मायके की याद दिलाने
फिर से बैरी सावन आया।

थोड़ी सी मेहंदी लगवा लूँ
और पहन लूँ हरी चूड़ियाँ
साड़ी हरी, संग ले घेवर
माथे पर लगा लूँ बिंदिया
सज के चलूँ मायके अपने
मुझे बुलाने सावन आया।

फोटो के पास बैठ कर कुछ
अपनी कहना, उनकी सुनना
थोड़ी देर कुछ रूठना उनसे
और मनाने गले भी लगना
दूर बहुत, पर हैं मेरे मन में
यही बताने सावन आया।

मन के दबे हुए दर्द जगाने
फिर से बैरी सावन आया।

सम्भाल रखा है

तेरे
अधरों का
वो पहला चुंबन
जो अंकित हुआ था
मेरे माथे पर
जन्म के बाद
आज भी
स्पर्श उसका
सम्भाल रखा है माँ!
तेरे जाने के बाद....!!

माँ (सेदोका)

१

ओस नहायी
खिली कमल जैसी
माँ जब गीत गाती
लगती सदा
सुबह की आरती
शाम की पुण्य कथा।

२

सबको खिला
जब खाने बैठती
ठंडी रोटियाँ दाल
सोचती बेटी
कल खाऊँगी खाना
अपनी माँ के साथ।

३

सँवारती माँ
घर और जीवन
अपनी संतान का
थकते कभी
किसी ने देखा नहीं
कोई ऐसा है कहीं!

४

भूल चुकी है
माँ अपनी पसंद
समझती है बस
सबका मन
उधड़े रिश्ते सीती
नीलकंठ लगती।

देख तो

आज मैं
तेरे साथ बैठा हूँ
मत कर चिंता
थोड़ी सी भी अब,
देख तो
कितनी जल्दी-जल्दी
बड़ा हो रहा हूँ
बस कुछ दिन और
फिर तू
बैठना पास मेरे
मुझे काम करते हुए
देखना इसी तरह
प्यार से
जैसे मैं आज
तुझे देख रहा हूँ।

~~~~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~~~~

थोड़ा रो लेती हूँ

लगी है मेहँदी हाथों में पिया के नाम की
हरी साड़ी, हरी चूड़ियाँ पिया के नाम की
झूलना है मुझे झूला अपने बचपन की सखियों सँग
आ रही याद मायके के झूले और आँगन की
सावन और तीज त्योहार पिता-माँ का प्यार
समेटा जो हैं आँचल में वही संभाले रखा है
कभी जो आँख नम होती उसे ही देख लेती हूँ
याद मन में उन्हें करके त्योहार मना लेती हूँ
बरसते आँख से आँसूं सँभाले ही नही जाते
सभी की देख कर खुशियाँ मैं भी खुश हो लेती हूँ
छुपा कर दर्द मन में ही बाँटती हूँ मैं खुशियाँ ही
बचा कर आँख मैं सबकी कहीं थोड़ा रो लेती हूँ।

माँ

आज चाँद मैं नहीं देखती
खाते हुए कहानी सुना माँ!
मीठे दूध की भरी कटोरी
इसमें रोटी तोड़ भिगा माँ!

एक-एक टुकड़ा रोटी का
आज मेरे संग तू भी खा,
चाँद सी मेरी माँ को देख
लजा, मेघ में छुपा है माँ!

ओ रे चंदा!

ओ रे चंदा!
छूना चाहता हूँ तुम्हें
अपनी बाहों में भरना चाहता हूँ तुम्हें,
बचपन से ही जुड़ गया था
तुमसे मन का रिश्ता
जब नानी-दादी की कहानियों में
माँ-पापा की लोरियों में
तुम शामिल रहते थे
मेरे मामा बन कर,
बहुत सताया-चिढ़ाया तुमने मुझे
स्वयं जागते थे रात भर
खिड़की से मुझे भी देखते थे
सोया हूँ या जागा हूँ,
बड़ा हुआ तो
रिश्ता और भी पक्का हो गया
करवाचौथ, अहोई अष्टमी
संकट चौथ, सत्यनारायण की कथा में
नानी-दादी और माँ तुम्हें देख कर
अर्ध्य देकर अपना व्रत खोलती थी
तुम्हारी प्रतीक्षा में मैं और पापा
जाने कितनी बार
छत पर जाने के लिए
सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते थे,
तुम्हारे आते ही मैं
चिल्ला कर कहता
लो निकल आया चाँद!
तुम्हारी पूजा होती और मैं

अब भोजन मिलेगा...सोच कर
प्रसन्न हो नाचने लगता,
और बड़ा हुआ तो
प्रेम समझने लगा
और अपनी प्रिया मुझे
तुम सी सुंदर लगने लगी,
सात फेरों के बंधन में बँधने के बाद
अब मैं भी अपनी माँ और पत्नी के साथ
व्रत रखता हूँ, पूजा के लिए
तुम्हारी प्रतीक्षा उनके साथ करता हूँ
बहुत अच्छा लगता है
नभ में चमकते हुए तुम्हें निहारना,
सुनो!
एक बात कहूँ
कहना नहीं किसी से,
मैं भी माँ -पापा की तरह
अपने बच्चों से तुम्हारा
रिश्ता बनवाऊँगा
जैसे मैंने तुमसे निभाया
वैसे ही उनसे निभवाऊँगा
बस तुम इसी तरह सदा
सबके मन बसे रहना
पीढ़ी दर पीढ़ी उनसे
रिश्ता निभाते रहना,
लेकिन आज तुम्हें छूना
बाहों में भरना चाहता हूँ
नभ से उतर कर
मेरी बाहों में आओ न
ओ रे चंदा.....!!!!!!

माँ-पा

जीवन में
जब भी कड़वाहटें मिलीं
तुम अमृत से परिपूर्ण करते रहे,
हृदय पर लगी चोटों पर
वात्सल्य के फाहे रखते रहे,
जीवन की
कड़ी परीक्षाओं के मध्य
जब हारने लगी
विजय के गीत सुना
उत्साहित करते रहे,
चिंताओं को कब कपूर सा उड़ाया
उनकी छाया से कैसे मुझे बचाया
माँ बन कर ही समझ आया
कब पापा बादल बन कर बरसे
कब मन की सूखी अवनि सरसी
पता चला न
कब-कब ताने
अपने आशीष के शामियाने
अंश आपका हूँ
तभी तो
गिर कर भी उठती हूँ
हार से नहीं भयभीत
विजय गाथा
लिखने को तत्पर रहती हूँ।

लो बन गए

लो बन गए
आप परनाना-परनानी
आपकी नातिन का
बेटा हुआ है
तभी तो आपका
और हमारा प्रमोशन हुआ है,
आप दोनों
मेरे नाना-नानी की जगह
और हम
आप दोनों की जगह आ गए हैं,
जो आप मेरे
बच्चों के लिए करते थे
अब हम वैसा कर रहे हैं
यही तो चक्र
है जीवन का
जिसमें पहले आप
हमारे साथ थे
अब इसमें
हम अपने बच्चों के साथ हैं।

संवाद

जीवन के
कठिन दौर से
आपकी बेटी गुजर रही है
आँधियों/झँझावातों से
लड़ रही है
इन्हीं में उलझी
तुम्हारे जन्मदिन पर
संवाद नहीं कर पाई
अपनी उलझनें/संघर्ष
तुमसे/पापा से
नहीं कह पाई,
सोचा....तुमसे कहूँगी
तो तुम चिंतित हो जाओगी
पापा के साथ
सारी रात जागती रहोगी,
पर एक माँ और पिता
बेटी के दुख से
भला अनजान रह सकते हैं!
तभी तो आपने
मुझे दुलराया है
अपना वरदहस्त रख

मुझे धैर्य बँधाया है
मंत्र दिया.....
“संघर्ष में विजयी वही होता है
जो अंत तक युद्धरत रहता है “
आज आपके जन्मदिन पर
जीवन मंत्र के रूप में
मैंने आपसे उपहार पाया है
माँ....आपका जन्मदिन
आज मुझे बहुत याद आया है
आपसे आज जीवन का
मूलमंत्र पाया है।

डॉ० भारती वर्मा बौड़ाई

नाम- डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

माँ का नाम- श्रीमती कमला वर्मा

पिता का नाम- श्री बाबूराम वर्मा

पति का नाम- श्री राकेश आनंद बौड़ाई

साहित्यिक उपनाम- बौड़ाई (साहित्य संगम संस्थान द्वारा उपनामकरण समारोह में प्रदत्त)

जन्मतिथि- ०४/१०/१९५७

ज्जन्मथान- देहरादून

वर्तमान पता- ९५, ब्लॉक- H, दिव्य विहार, डाँडा धर्मपुर, डाकघर- नेहरू ग्राम, देहरादून- २४८००१ (उत्तराखंड)

शिक्षा- एम.ए., बी.एड., डी.फिल. (शोध द्वारा- गद्यकार बच्चन-एक आलोचनात्मक अध्ययन- विषय पर)

कार्य क्षेत्र- कविता, लेख, संस्मरण, कहानी, लघुकथा, वर्ण पिरामिड, हाइकु, मुक्तक, घनाक्षरी, ताँका, सेदोका, सायली, समीक्षा, पत्र विधा आदि।

सामाजिक क्षेत्र- अपने पति के "अविराम प्रवाह" चौरिटेबल ट्रस्ट के किए जा रहे सेवा कार्यों में सहयोग

मोबाइल/व्हाटसअप- ९७५९२५२५३७

ईमेल- bharati.bourai007@gmail.com

प्रकाशित पुस्तकें - १२ (एकल संग्रह), कविता संग्रह- ८, आलोचना-१, सृजक-सृजन-समीक्षा-१, लघुकथा संग्रह-२, आलेख संग्रह-१, प्रकाशित कुल साझा पुस्तकें-१३४, साझा संग्रह (काव्य संग्रह)-१२०, साझा संग्रह (लघुकथा)-१२, साझा संग्रह (आलेख)-०१, साझा पत्र संग्रह-(०१), लगभग ८५ से अधिक पत्र-पत्रिकाओं, ई पत्रिका, ब्लॉग आदि में रचनाएँ प्रकाशित

संपादन- १-प्रवाह (विद्यालय पत्रिका), २-आदर्श कौमुदी(मासिक पत्रिका बिजनौर) के गंगा विशेषांक का संपादन, ३- माँ (साझा संस्मरण आलेख संग्रह) ई बुक, साहित्य संगम संस्थान २०२०, ४- मेरे पिता-मेरे आदर्श (साझा संस्मरण आलेख संग्रह) ई बुक साहित्य संगम संस्थान २०२०, अनुवाद-१-डॉ.रमण शांडिल्य, संपादक-अरुण नागरी (त्रैमासिक), की बज्जिका कविताओं का अनुवाद 'सदभावना दर्पण' (मध्यप्रदेश) और 'अंचल भारती' (उत्तर प्रदेश) में प्रकाशित।

सम्मान- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण (पूर्व रक्षा मंत्री) द्वारा हिंदी साहित्य सेवा के लिए सम्मान सहित अन्य ३५ सम्मान, साहित्य संगम संस्थान द्वारा ३० सम्मान

ब्लॉग- www.kamalvithi.com

वेबसाइट- www.kamalvithi.com

ईमेल - bharati.bourai007@gmail.com

लेखन का उद्देश्य- अपने पिता श्री बाबूराम वर्मा जी से मिली "हिंदी प्रेम और लेखन की विरासत" को अपने लेखन से समृद्ध करते हुए, अपनी हिंदी माँ के गौरव को बढ़ाना

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9424765259, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-252-4

मूल्य 250/-